मुस्लिम महिलाओं में सामाजिक स्वतंत्रता एवं शिक्षा का नियंत्रण उन्मुखता के साथ संबंध

***Dr.Nikhat Parvin ***
Assistant Professor, Gov.Girls Degree College,Ujjain (M.P.)

सारांश

प्रस्तुत अनुसंधान में मुस्लिम महिलाओं में सामाजिक स्वतंत्रता व शिक्षा का नियन्त्रण उन्मुखता के साथ संबंध का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु मुस्लिम महिलाओं का चयन यादृच्छिक रूप से प्रतिदर्श में लिया गया। अध्ययन प्रदत्त संकलन हेतु भूषण द्वारा निर्मित सामाजिक स्वतंत्रता मापनी (WSFS) तथा हसनैन व जोशी द्वारा निर्मित नियंत्रण उन्मुखता मापनी(LOC) का प्रयोग किया गया। कुल मुस्लिम महिलाओं(N=243) से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण विवरणात्मक सांख्यिकी व प्रसारण विश्लेषण विधि से किया गया। प्राप्त परिणाम बताते हैं कि मुस्लिम महिलाएं शिक्षा के किसी भी स्तर पर हो उन्हें सामाजिक स्वतंत्रता कम प्राप्त है। नियंत्रण उन्मुखता के साथ सामाजिक स्वतंत्रता का सार्थक संबंध नहीं पाया गया। किंतु नियंत्रण उन्मुखता के साथ शिक्षा का सार्थक संबंध पाया गया साथ ही निम्न सामाजिक स्वतंत्रता एवं शिक्षा का निम्न स्तर बाध्य नियंत्रण उनमुख्ता से संबंधित पाया गया।

प्रस्तावना

सभी धार्मिक समुदायों में एवं सभी सभ्यताओं में महिलाओं को दूसरे दर्जे की स्थिति ही प्राप्त है। उसे पुरुष प्रधान समाज में पुरुषों की तुलना में निकृष्ट स्थिति में ही रखा गया है। इसलिए उन्हें कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अपने धार्मिक समूह, सामाजिक समूह ऋणात्मक अभिवृत्ति पुरुषों की महिलाओं के प्रति नियंत्रण रखने की प्रवृत्ति जैसी समस्याओं के कारण महिलाएं आज भी कई धर्मों और समुदायों में दयनीय स्थिति में है और कई बार विरोध करने के कारण धार्मिक व सामाजिक समूह से अपने को अकेला पाती है किंतु फिर भी महिलाएं अपने अधिकारों को समानता के लिए आगे आई है और वह बेहतर स्थिति में है।

मुस्लिम समाज में महिलाओं की भूमिका भी सार्थक रूप से परिवर्तित हुई है, जब इस्लाम धर्म की शुरुआत हुई थी तब अरब में महिलाओं की स्थिति, सामाजिक, आर्थिक, राजनीति क्षेत्रों में बहुत दयनीय थी। इस्लाम में एवं पवित्र कुरान में कहा गया है कि सभी मर्द और औरत अल्लाह के सामने बराबर है और उन्हें बराबरी के अधिकार प्राप्त है, किंतु देखने में आता है कि इस्लाम धर्म को मानने वाले मुस्लिम सामाजिक जीवन में महिलाओं को बहुत सारे क्षेत्रों में समानता का अधिकार व दर्जा प्राप्त नहीं है। इसका मुख्य कारण परंपरावादी मुस्लिम उलेमा एवं कुरान धर्म ग्रंथ की गलत व्याख्या भी है। जहां परंपरावादी मुस्लिम पुरुष कहते हैं कि मुस्लिम महिलाओं को जितना संभव हो एवं पिता के नियंत्रण होना चाहिए वे यह भी कहते हैं कि मुस्लिम महिलाओं की भूमिका घर एवं घरेलू कामकाज तक ही सीमित होना चाहिए।

दरअसल मुस्लिम परंपरा वादी पुरुषों का यह कथन पश्चिमी सभ्यता में व्याप्त मुक्ति यौन संबंध एवं खुले पहनावे की प्रतिक्रिया है। वे नहीं चाहते कि मुस्लिम महिलाओं को स्वतंत्रता प्रदान कर समाज को पत्र में डाला

जाए। इसके बावजूद मुस्लिम बुद्धिजीवी वर्ग और स्वयं महिलाएं अपनी स्वतंत्रता के लिए आगे आई है। Shareefa khanam (2009) संस्थापक स्टेप तमिलनाडु का कहना है कि मुस्लिम महिलाओं को बात करने दुख दर्द कहने और इबादत की आजादी मिले। सामुदायिक फैसलों में उनकी राय ली जाए। उलेमा काउंसिल ऑफ इंडिया के प्रमुख मौलाना Khalid Rasheed(2009)का कहना है कि मुस्लिम महिलाएं शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ी है धर्म के नाम पर उनकी शिक्षा में किसी को बाधा नहीं पहुंचाना चाहिए। ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के युवा सदस्य Maullana Firangi (2009) का कहना है कि सह शिक्षा लड़के और लड़कियों का साथ पढ़ना कभी भी इस्लाम या शरीयत को खतरा नहीं बना। विद्वान मौलवी मानते हैं कि शरीयत या कुरान की आयातों में सहशिक्षा पर प्रतिबंध का प्रावधान नहीं।

प्रस्तुत अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य उपरोक्त कथनों में से आगे आकर मुस्लिम महिलाओं को मुस्लिम समाज में दी जाने वाली स्वतंत्रता का उनके व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव जैसे उनकी नियंत्रण उनमुक्ता के साथ संबंधों को जानना है क्योंकि सामाजिक स्वतंत्रता रीति रिवाज निषेधों परंपरागत भूमिका से बाहर आना किसी भी महिला की जीवनशैली का महत्वपूर्ण अंग है। इसलिए जरूरी है कि हम सामाजिक स्वतंत्रता के संबंध को कुछ परिवर्त्यों के साथ जोड़कर वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन करें ताकि इनके प्रभावों को ज्ञात किया जा सके।

अनुसंधानात्मक पृष्ठभूमि

1. सामाजिक स्वतंत्रता

स्वतंत्रता का त्वरित उत्तर है कि पूर्ण विकास। सामाजिक स्वतंत्रता से तात्पर्य एक व्यक्ति के पास अपने संपूर्ण विकास के लिए अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए एवं सशक्तिकरण के लिए सारी संभावनाएं मौजूद हो। सामाजिक स्वतंत्रता का प्रत्यय महिलाओं के संदर्भ में उनकी इस आवश्यकता के साथ है जहां वह अपने आप को सामाजिक निषेध, परंपरागत भूमिकाओं, रीति-रिवाजों से मुक्त कराना चाहती है जो समाज में उन्हें निम्न स्तर या दूसरे दर्जे पर लाकर खड़ा कर देती है। अन्य अर्थों में उन (1) सभी निषेध, रीति-रिवाजों, परंपराओं, भूमिकाओं को तोड़कर बाहर आना चाहती है, स्वतंत्र होना चाहते है। (2) पिता एवं पति के नियंत्रण, दखलंदाजी से स्वतंत्रता (3) लैंगिक व वैवाहिक स्वतंत्रता, (4) आर्थिक स्वतंत्रता व सामाजिक समानता (5) सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेने, निर्णय लेने व आने-जाने की स्वतंत्रता Kessler et. al (1976) के अध्ययन के अनुसार महिलाओं की स्थिति संपूर्ण समाज में पुरुषों की भोग वादी प्रवृत्ति की ही सूचक है। Kapur (1974) के अनुसार शहरी महिलाओं को जीवनसाथी चुनने की अधिक स्वतंत्रता होती है जो स्वयं कमाती है वह अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाती है। Rama devi (1963) ने पाया कि महिलाओं के प्रति भारतीय समाज की अभिवृद्धि परंपरागत ही है किंतु शिक्षित एवं कामकाजी महिलाएं कम परंपरागत अभिवृत्ति रखती है और उन्हें समाज में स्वीकृति भी प्राप्त है।

Kakar (1979) के अनुसार महाविद्यालय तक अध्ययनरत लड़की अधिक उम्र की विवाहिता से कहीं अधिक अच्छी जीवन साथी का प्रदर्शन करती पाई गई। Khatri (1970) भारतीय समाज में उच्च शैक्षिक एवं आर्थिक स्तर भी महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। Sinha (1984) ने पाया कि अब पारिवारिक संरचना में बदलाव आया है। यह सच है कि पारिवारिक एवं सामाजिक संरचना हमें कई बार अपने लिए चुनने का अधिकार देती है परंतु बहुत बार यह पसंद हमारी नहीं होती । बहुत सारी महिलाएं अन्य की पसंद के कारण बुरी स्थिति में है दूसरों की पसंद अपनाने की विध्वंसात्मक सामाजिक संरचना, सामाजिक पहचान को खो देती है और यह निर व्यक्तिकता कई बार ऋणात्मक क्रियाओं के रूप में सामने आती है।

मुस्लिम, धार्मिक ग्रंथ कुरान में उतरी आयातों मैं महिलाओं को कमतर और पुरुषों को महिलाओं पर राज करने वाला व्यक्ति नहीं माना गया है बल्कि दोनों अपनी गलतियों एवं उत्तरदायित्व के लिए बराबरी से जिम्मेदार होंगे। (आयत 2:35, 7:19, 27:20, 117:123) Ati Hammuda (2010) के अनुसार कुरान की आयतों में मुस्लिम महिलाओं को तलाक लेने का अधिकार है उसे सामाजिक जीवन में घर से निकलने आने-जाने रिश्तेदारों से मिलने का अधिकार है। अल अहजाब का पूरा अधिकार होगा। (अलजुमर 39:9) Hussain Sahiba (1998) कहती है कि मुस्लिम महिलाओं की तरक्की में धार्मिक या इस्लाम के नियम बीच में नहीं आते बल्कि पारिवारिक संरचनाएं रीति-रिवाज और अशिक्षा खुद के जिम्मेदारी ना लेना एवं अभिप्रेरणा की कमी मुख्य कारण है। Indu

menon (1981) कहते हैं मुस्लिम महिलाएं पिछड़ेपन से आधुनिक हो रही है और अपनी सामाजिक स्वतंत्रता व आत्मनिर्भरता के लिए अग्रसर है। सच है कि धर्म अनुसार मुस्लिम महिलाओं को सभी अधिकार समानताएं प्राप्त है पर यह भी उतना ही सच है कि भारत में सामाजिक, शैक्षिक वह आर्थिक दृष्टि से देखा देखा जाए तो वे अन्य धर्मों की महिलाओं की तुलना में पिछड़ी हुई है, इसका एक प्रमुख कारण उनकी शिक्षा भी है। भारत में मुस्लिम के अंदर शिक्षा को लेकर क्रांति पैदा हुई है और अनेक प्रांतों व जिलों में जागृति आई है। इनका कहना है कि बुर्के से नहीं शिक्षा से मुस्लिम महिलाओं की सुरक्षा प्रदान की जा सकती है। Fareeda Thakur कहती है कि मुस्लिम समाज की समझ में आ रहा है कि बिना शिक्षित हुए प्रगति की राह में नहीं बढ़ा जा सकता।

Negi A.K. (2010) के अनुसार महिलाएँ कुछ साधारण घरेलु निर्णयों में जैसे घर की सफाई बच्चों की देखभाल बाजार जाना , आभूषणों खरीदा में महिलाओं के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है किन्तु बड़ी बचत, संपत्ति खर्च , महंगे सामान व स्वास्थ्य देखभाल में महिलाओं की राय नहीं ली जाती है। Ahmed N.P. (2011) घरेलु निर्णय लेते समय शिक्षा का सार्थक प्रभाव मुस्लिम महिलाओं में देखा गया। जहाँ कुछ महत्वपूर्ण निर्णय शिक्षित महिलाएँ लेती पाई गयी वहीं कुछ महत्वपूर्ण निर्णय गर्भ धारण, परिवार में बच्चों की संख्या , जीवन साथी का चुनाव व बड़ी बचत में शिक्षित अशिक्षित समूह में अंतर नहीं पाया गया।

सामाजिक स्वतंत्रता के उपरोक्त अनुसंधान बताते है कि मुस्लिम महिलाएँ अपनी स्वतंत्रता के लिए प्रयासरत हैं वे अपनी शिक्षा के लिए भी आगे आई हैं क्योंकि सामाजिक स्वतंत्रता व शिक्षा सिखाती है कि व्यक्ति स्वयं के प्रति जिम्मेदार होने के साथ–साथ समाज के प्रति भी उत्तरदायी है अर्थात प्रत्येक व्यक्ति के पास इतनी स्वतंत्रता आवश्यक होनी चाहिए कि वे स्वयं के लिए जागरूक हो और समाज के लिए उत्तरदायी भी।

2. नियंत्रण उन्मुखता

पुर्नबलन के प्रति आंतरिक या बाह्य नियंत्रण की सामान्यीकृत प्रत्याक्षा ही नियंत्रण उन्मुखता है। Rotter(1966) का मानना है कि व्यक्ति अपने व्यवहार का कारण या जो भी परिणाम आ रहे हैं उनका कारण या तो वातावरण जन्य कारकों बाह्य कारक का मानना है या आंतरिक कारक स्वयं के निर्णय प्रयास कुशलता , योग्यता को मानता है। Lefcourt (1976) प्रत्याक्षीकृत नियंत्रण को पुर्नबलनों के प्रति आंतरिक या बाह्य नियंत्रण की सामान्यीकृत प्रत्याक्षा कहा जा सकता है। इस तरह यह नियंत्रण उन्मुखता एक सातत्य पर दो विमाओं मे नियंत्रण उन्मुख ज्यादा सफल होते हैं जबकि बाह्य नियंत्रण उन्मुख असफल व शाला छोडकर जाने वाले होते है। Ahmad, Asgar, Maryan(2012) ने पाया नियंत्रण उन्मुखता सार्थक रूप से शैक्षणिक निष्पादन से संबंधित थी । Leycourl (2006) ने पाया की स्नात्कोतर विद्यार्थियों में आन्तरिक नियंत्रण उन्मुक्ता व स्नातक के विद्यार्थियों में E -LOC पाया जाता है। Pio Pinyer (2010) उच्च शिक्षा में प्रवेश LOC से प्रभावित नहीं होता लेकिन व्यवसाय में प्रवेश के बाद उच्च शिक्षा का चुनाव आंतरिक नियंत्रण का प्रत्यय प्रस्तुत कर देता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. मुस्लिम महिलाओं में नियंत्रण उन्मुखता के साथ सामाजिक स्वतंत्रता के संबंध को ज्ञात करना।
2. मुस्लिम महिलाओं में नियंत्रण उन्मुखता के साथ शिक्षा के संबंध को ज्ञात करना।
3. मुस्लिम महिलाओं में नियंत्रण उन्मुखता के साथ सामाजिक स्वतंत्रता, शिक्षा एवं इनकी अन्त क्रिया के संबंध को ज्ञात करना।
4. मुस्लिम महिलाओं में नियंत्रण उन्मुखता के साथ निम्न समूहों में संबंध को ज्ञात करना।
    - उच्च सामाजिक स्वतंत्रता समूह एवं शिक्षा स्तर
    - मध्यम सामाजिक स्वतंत्रता समूह शिखा स्तर
    - निम्न सामाजिक स्वतंत्रता एवं शिक्षा स्वर
5. मुस्लिम महिलाओं में नियंत्रण उन्मुख्ता के साथ आयु के संबंध को ज्ञात करना।

परिकल्पनाए

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य की पूर्ति हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाएँ एवं उप परिकल्पनाएँ निर्मित की गयी है।

1. मुस्लिम महिलाओं में नियन्त्रण उन्मुखता के साथ सामाजिक स्वतंत्रता का सार्थक संबंध पाया जाएगा।
2. मुस्लिम महिलाओं में नियंत्रण उन्मुखता के साथ शिक्षा का सार्थक संबंध पाया जायेगा।
3. मुस्लिम महिलाओं में नियंत्रण उन्मुखता के साथ सामाजिक स्वतंत्रता शिक्षा एवं इनकी अन्त: क्रियाओं में सार्थक संबंध पाया जाएगा।
4. मुस्लिम महिलाओं में नियंत्रण उन्मुखता के साथ निम्नांकित समूहों में सार्थक संबंध पाया जाएगा।
    - उच्च सामाजिक स्वतंत्रता समूह एवं शिक्षा स्तर ।
    - मध्यम सामाजिक स्वतंत्रता समूह एवं शिक्षा स्तर ।
    - निम्न सामाजिक स्वतंत्रता एवं शिक्षा स्तर।
5. मुस्लिम महिलाओं में नियंत्रण उन्मुखता के साथ आयु का सार्थक संबंध पाया जाएगा।

प्रविधि

अध्ययन हेतु इस्लाम धर्म की 243 मुस्लिम महिलाएं ली गई है। यह महिलाएं यादृच्छिक रूप से प्रतिदर्श में पड़ोस, कॉलेज मुस्लिम बहुल क्षेत्र, मोहल्ले से अनुसंधान में सहयोग की सहमति से ली गई। उनकी उम्र 23 से 40 वर्ष थी। अध्ययन हेतु उपलब्ध मानकीकृत मापनियाँ विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति एवं परिकल्पना ओं की जांच हेतु ली गई जो इस प्रकार है।

1. मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक स्वतंत्रता का मापन भूषण (1987) द्वारा महिलाओं के लिए निर्मित Women Social freedom scale WSFS द्वारा किया गया।
2. डॉ एन हसनैन द्वारा किया गया नियंत्रण उन्मुखता का मापन हसनैन (1992) द्वारा निर्मित Locus of control scale द्वारा किया गया।

प्रस्तुत अध्ययन में संग्रह किए गए आंकड़ों के विश्लेषण व परिकल्पनाओं की जांच के लिए
विवरणात्मक सांख्यिकी एक दिशीय प्रसारण विश्लेषण (ANOVA) का प्रयोग किया गया।
यादृच्छिक रूप से चयन किए गए प्रतिदर्श M = 243 पर मानकीकृत मांपनियों का प्रशासन किया गया। सर्वप्रथम महिला सामाजिक स्वतंत्रता मापनी प्रशासितकी गई। तत्पश्चात इस मापनी प्राप्त अंकों के आधार पर तीन समूहों में बांटा गया। प्रथम समूह उच्च सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त द्वितीय मध्य सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त व तृतीय निम्न सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त इन सभी समूहों के बीच नियंत्रण, उन्मुखता, संवेगात्मक, परिपक्वता वह आत्म सम्मान के साथ संबंधों व भिन्नताओ का मापन किया गया।

मुस्लिम महिलाओं को शिक्षा के तीन स्तर पर बांटा गया है। शिक्षा के संबंध में जानकारी मांपनियों के साथ पृथक प्राप्त की गई है। उच्च शिक्षित स्तर में स्नाकोत्तर , एम. फिल. व पी एच डी उपाधि प्राप्त मुस्लिम महिलाएं हैं। मध्यम शिक्षित स्तर में 12वीं से स्नातक उपाधि प्राप्त मुस्लिम महिलाएं हैं वह निम्न स्तर में वह मुस्लिम महिलाएं हैं जिनकी शिक्षा का स्तर 10वीं व उससे नीचे की कक्षाओं का है। इस तरह अनुसंधान अभिकल्प सामाजिक स्वतंत्रता के तीन समूह एवं शिक्षा के तीन स्तर 3x3 प्रसरण विश्लेषण है एवं परिणाम निम्नांकित तालिका में प्रदर्शित है –

तालिका क्र. 1 3x3 कारकीय अभिकल्प विभिन्न खण्डों में प्राप्त उत्तरदाताओं की संख्या

सामाजिक स्वतंत्रता	शैक्षिक स्तर			कुल	प्रतिशत
	उच्च	मध्यम	निम्न		
उच्च(HSF)	25	25	27	85	34.97%
मध्यम(MSF)	21	21	17	52	21.39%

निम्न(LSF)	36	36	36	106	43.62%
कुल	82	81	80	243	99.98%

तालिका क्र. 2 नियंत्रण उन्मुखता (LOC) तथा सामाजिक स्वतंत्रता [HSF/MSF/LSF] के तीनों समूह एवं शिक्षा के स्तर [H/M/L] के संबंध के लिए 3x3 प्रसारण विश्लेषण का सारांश

Table – 2

Group	N	M	SD	df	F-Value
High social freedom	85	46.20	10.97		
Moderate social freedom	52	45.35	8.32	2	4.90*
Low social freedom	106	46.90	11.05		
High Education level	82	43.35	11.09		
Moderate edu. Level	81	44.06	10.62	2	3.165*
Low edu. Level	80	44.54	8.85		
SFx Edu Interaction	243	46.32	10.19	4	2.309
Age 23-31	162	46.46	10.19	1	0.090
Age 32-42	81	46.04	10.82		

*Significant at 0.05 level

तालिका क्र. 3 सामाजिक स्वतंत्रता के तीनों समुह [HSF/MSF/LSF] एवं शैक्षिक स्तर [HML] में नियंत्रण उन्मुखता [LOC] के साथ संबंधो का एक मार्गीय प्रसरण विश्लेषण

Group	N	M	SD	df	F-Value
High social freedom	85	46.20	10.97	2	.444
Moderate social freedom	52	45.35	8.32	2	1.172
Low social freedom	106	46.90	11.05	2	7.065**

**Significant at 0.05 level

नियंत्रण उन्मुखता के साथ सामाजिक स्वतंत्रता एवं शिक्षा की मध्यमान भिन्नतायें
नियंत्रण उन्मुखता तथा सामाजिक स्वतंत्रता [HSF/MSF/LSF] की तीनों समूह एवं शिक्षा के स्तर [H/M/L] के संबंध के लिए 3x3 प्रसारण विश्लेषण

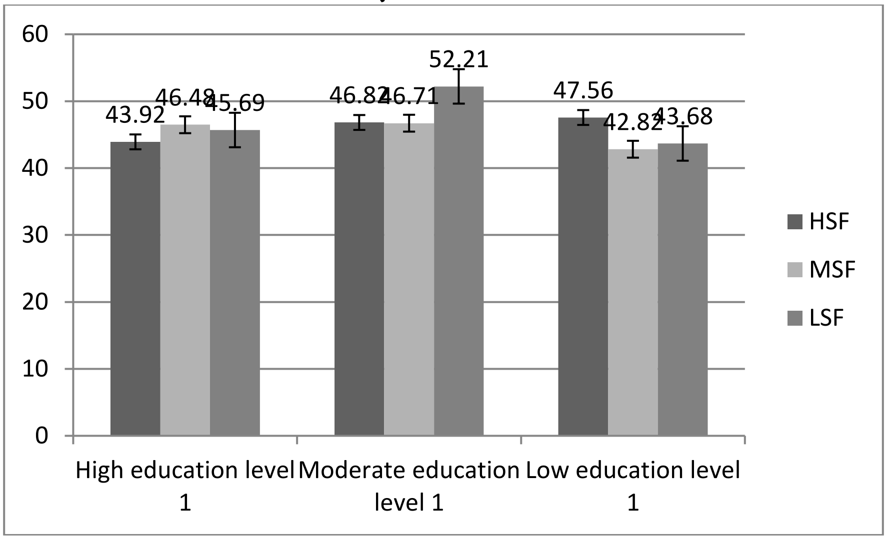

नियंत्रण उन्मुखता के साथ सामाजिक स्वतंत्रता एवं शिक्षा की अन्त: क्रियाये

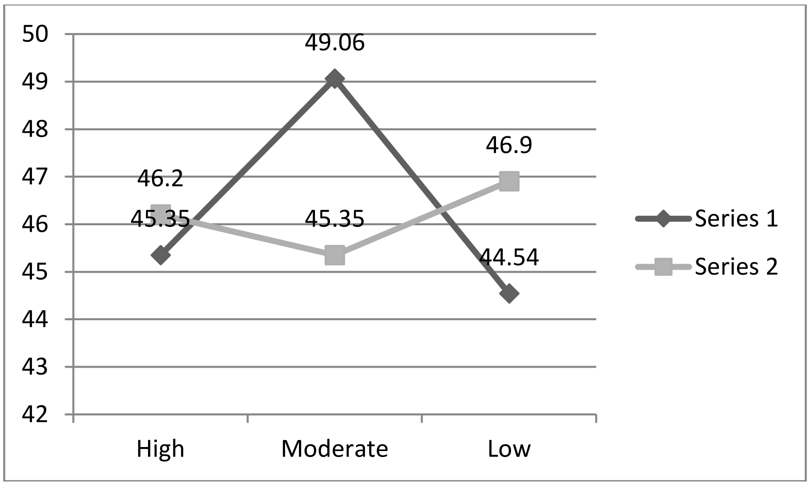

तालिका क्रमांक 1 एवं 2 का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि-

1. नियंत्रण उन्मुखता के साथ सामाजिक स्वतंत्रता का सार्थक संबंध नहीं पाया गया।
2. नियंत्रण उन्मुखता के साथ शिक्षा का सार्थक संबंध पाया गया।
3. निम्न सामाजिक स्वतंत्रता एवं शिक्षा का निम्न स्तर बाह्य नियंत्रण उन्मुखता प्रदमिति करते पाए गए

परिकल्पित भिन्नताओं एवं संबंधों की जांच के पश्चात उपरोक्त निष्कर्ष में यह पाया गया कि तालिका क्रमांक 1 के अनुसार (N-243) मुस्लिम महिलाओं में 85 महिलाएं उच्च सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त है, जिसका प्रतिशत 34.97% है जबकि मध्यम सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त 52 (21.39 प्रतिशत) निम्न सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त 106 (46.62%) मुस्लिम महिलाएं ऐसी हैं जिन्हें निम्न सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त है।
उच्च शिक्षित महिलाओं को निम्न सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त है। (N=36) व निम्न अशिक्षित महिलाओं को भी निम्न सामाजिक स्वतंत्रता में प्राप्त है। (N=36) अर्थात मुस्लिम महिलाएं शिक्षा के किसी भी स्तर पर हैं उन्हें सामाजिक स्वतंत्रता में कम ही प्राप्त हैं। उपरोक्त परिणाम के संदर्भ में Sabiya Hussain (1998) कहती है कि मुस्लिम महिलाओं की तरक्की में स्वतंत्रता में इस्लाम के नियम आते बल्कि पारिवारिक संरचना, रीति

रिवाज, अशिक्षा, आर्थिक कारण उत्तरदायित्व की कमी व अभिप्रेरणा की कमी है। Sachar Committee Report (2006) समाज में अन्य धर्मों की तुलना में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, व शैक्षणिक दृष्टि से पिछ्ड़ी है इन कारणों में मुस्लिम पुरुष की प्रभुत्व वादी प्रवृत्ति तलाक बहु विवाह आदि शामिल है। Ali asgar (2000) यह दुर्भाग्य की बात है कि हमारे उलेमा हर नई चीज का विरोध करते हैं और बाद में खुद के लाभ के लिए इसे स्वीकार कर लेते हैं। हम समय के साथ नहीं चलते और फिर समय हमें अपने साथ चलने के लिए मजबूर करता है परंतु इस बीच हम अपनी जड़ता की कीमत चुका देते हैं। Ahmed (2011) इस्लाम में महिलाओं को प्राप्त अधिकार एवं उनके अनुप्रयोग में सार्थक यह संबंध पाया गया है उन्हें अधिकार मालूम है पर अनुप्रयोग ना के बराबर है। साथ ही कुछ घरेलू साधारण विषयों में उनकी राय ली जाती है। परंतु महत्वपूर्ण फैसले जमीन मकान खरीद आदि में महिलाओं की राय नहीं ली जाती। उपरोक्त अनुसंधात्मक निष्कर्ष इस बात का समर्थन करते हैं कि मुस्लिम महिलाओं को सामाजिक स्वतंत्रता कम प्राप्त है फिर भी वह शिक्षा के किसी भी स्तर पर हो।

नियंत्रण उन्मुखता के साथ सामाजिक स्वतंत्रता का सार्थक संबंध नहीं पाया गया। (P-value greater than 05) अतः शोध उपकल्पना मुस्लिम महिलाओं में नियंत्रण उन्मुखता के साथ सामाजिक स्वतंत्रता का सार्थक संबंध पाया जाएगा अस्वीकृत की जाती है। इसका एक कारण यह हो सकता है कि शिक्षित समूह व निम्न शिक्षित समूह में भी सामाजिक स्वतंत्रता कम प्राप्त है अर्थात जहां शिक्षा की भिन्नता सामाजिक स्वतंत्रता को प्रभावित नहीं कर पा रही है वहीं सामाजिक स्वतंत्रता का नियंत्रण उन्मुखता के साथ भी सार्थक संबंध निर्मित नहीं हो पा रहा पर कुल (N=243) मुस्लिम महिलाओं 68(27.98%) महिलाएं आंतरिक नियंत्रण उन्मुखता की 108 (44.44%) महिलाएं बाह्य नियंत्रण उन्मुखता की 67 (27.57%) Bi local (MLOC) क्योंकि इन्हें कम सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त है। जो भी परिणाम आ रहे हैं इनका कारण वे बाह्य कारकों पर ही डाल रहें है। Rotter (1964), Weiner(1973), Lef court (1976) Nowicki (1983) सामाजिक अन्त क्रियाओं में आंतरिक नियंत्रण उन्मुख व्यक्ति अपने व्यवहार के परिणामों का नियंत्रित करने का प्रयास करते है जबकि ऐसा प्रयास बहिर्मुखता के व्यक्ति नहीं करते। नियंत्रण उन्मुखता से संबंधित अनुसंधानों में सामाजिक स्वतंत्रता के साथ अध्ययन नहीं के बराबर है, वही मुस्लिम महिलाओं में नियंत्रण उन्मुखता के साथ शिक्षा का सार्थक संबंध पाया गया। (P-value less than 0.05) शिक्षा का सार्थक संबंध नियंत्रण उन्मुखता के साथ है। अत: शोध उपकल्पना मुस्लिम महिलाओं में नियंत्रण उन्मुखता के साथ शिक्षा का सार्थक संबंध पाया जाएगा स्वीकृत की जाती है। Chen et. al. (2001) ने पाया की नियंत्रण उन्मुखता सार्थक रूप से शैक्षणिक सुधार से संबंधित होती है। Asgar & Maryam (2012) ने अपने अध्ययन में पाया कि नियंत्रण उन्मुखता शैक्षणिक निष्पादन से संबंधित थी।

साथ ही मुस्लिम महिलाओं में निम्न सामाजिक स्वतंत्रता व शिक्षा का निम्न स्तर बाह्य नियंत्रण उन्मुखता से संबंधित पाया गया। (P-Value less than 0.01) अत: शोध उपकल्पना मुस्लिम महिलाओं में नियंत्रण उन्मुखता के साथ निम्न सामाजिक स्वतंत्रता समूह एवं शिक्षा के स्तर में सार्थक संबंध पाया जाएगा। स्वीकृत की जाती है। Shiraev levy (2004) नियंत्रण उन्मुखता निम्न सामाजिक, आर्थिक शैक्षिक स्थिति से संबंधित होती है। इस परिवार में पले किशोर-किशोरी बाह्य नियंत्रण उन्मुखता रखते है। Lefecourt (2006) स्नातकोत्तर विद्यार्थी आन्तरिक नियंत्रण उन्मुखता व कम शिक्षित विद्यार्थी बाह्य नियंत्रण उन्मुखता रखते है। Takaki (2006) वे महिलाएँ जो शिक्षित होती है। आंतरिक नियंत्रण उन्मुखता रखती है। Schultz and scholtz (2005) महिलाएँ पुरूषों की तुलना में ज्यादा बाह्य नियंत्रण उन्मुखता रखती है। उपरोक्त अध्ययन निष्कर्ष प्राप्त परिणाम का समर्थन करते है।

Reference

Admin Gilmer (2004)http//news,yahoo.com/snm/20080619/hinm/sel/confident d.

Ati, Hammuda abdul (2010) “Islam in focus” the status of women in Islam, jannah, Org. Islam peace, p1-8

Ali Asger, E,(2011), “Problem of muslim women in india.” Bombay of Islamic society.

Berrg, et, al, (1992) Cross cultural psychology research and application ,cambridge. Cambridge university press Isbn 0-52137761-7

Bhushan L.I. (1987) women social freedom scale, National psychological corporation agra UP
Chen .G Gaily, S<. and Eden D. (2001) Validity of New General Self Efficiency Scale' Joorhal of organizational research methods, Vol 4 pp 62-83
H amid P.N. (1994) Assertiveness and personality Dimention in Chinese student. Psychological reports 75, 127-130
Hasnain N, Joshi D. (1998) A study of Indian Muslim women, new delhi Vedam books Indian Express mumbai 10/08/85
Indu Menon M (1981) Status of muslim women in India, A case of Kerala, New Delhi UP house
Kakar, S (1979) Childhood in India Traditional ideas and contemporary REality. Internation social Journal 31444-56
Kapur, Promilla (1974) , The changing status of qorking women in India Delhi vikas.
Kessler, B.S. (1976) ,"women : An anthropological niew, New york . Halt
Khatri A 1970 personality and mental health of indians in the context of their changing family organization, Vol. 1. New york wiley 389-412.
Leycourt H.M. (1976) Locus of control Trends in theory and Research Nj, Lawrence Eribaam Asociates ISBN -O-470-154044-0
Leycourt H.M. (1976) , Locus of control Trends in theory and research NJ , Lawrence Eribaam Associate ISBN -O-470154044-0
Leycourt H.M. (2006) Internal versus External control of reigancement : A Review , psychological Bulletin, 65(4) 206-20
Lynch, Shirley , Huryord (2002) Parental, Enabling Attitudes and Locus of Control of alrinks and Honors students, Adolescence 37 (147) 527-549
Negi A.K. (2010) Impact of House hold decision making power on women Empowerment in india Evidence from NFHS - 3 Survey.
Nowicki Segai (1971), A locus of control scale for children journal of coonselling and clinical psychology, 42, 148,55